ResearchGate

See discussions, stats, and author profiles for this publication at: https://www.researchgate.net/publication/324390014

# □□□□□ □□□ □□□□□□□, □□□□ □ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ - II

**Research** · December 2017

DOI: 10.13140/RG.2.2.20293.55523

CITATIONS
0

READ
1

**1 author:**

Bhagawati Paraksh Sharma
Pacific University India

**254** PUBLICATIONS **0** CITATIONS

SEE PROFILE

All content following this page was uploaded by Bhagawati Paraksh Sharma on 10 April 2018.

The user has requested enhancement of the downloaded file.

# विश्व भूख सूचकांक, भारत व स्वदेशी की रीति-नीति-II

## (कृषि सुधारः समावेशी व धारणक्षम विकास की पूर्वावश्यकता)

*इस लेख श्रंखला के विगत अंक के दिये प्रथम लेख में भारत में बेरोजगारी, अल्पपोषण व कुपोषण से नष्ट बचपन व उच्च शिशु मत्यु दर विनिर्माणी उत्पादन अर्थात मेन्यूफेक्चरिंग सेक्टर में फैलती रूग्णता, उद्योगों पर बढ़ता विदेशी नियंत्रण जैसी कुछ समस्याओं का संकेत भर किया था। उस लेख के अंत में देश को वर्तमान आर्थिक समस्याओं से उबारने हेतु, स्वदेशी की रीति–नीति पर कुछ लेख प्रस्तुति प्रस्तावित की गयी थी। इसी श्रंखला में सर्वप्रथम कषि क्षेत्र, जिस पर देश की 52 प्रतिशत जनसंख्या निर्भर है प्रस्तुत किया जा रहा है* – **प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा**

**हमारी कृषि सामर्थ्यः**

विश्व की सर्वाधिक कृषि योग्य भूमि, सर्वाधिक पशुधन, और सर्वाधिक विविधतापूर्ण 127 प्रकार के कृषि जलवायु क्षेत्र, भारत के पास हैं। इसे ध्यान में रखते हुये ही प्रथम पंचवर्षीय योजना में कृषि के लिये सर्वोच्य 15 प्रतिशत व कृषि तथा सिंचाई पर संयुक्त रूप से 31 प्रतिशत निवेश (investment) का प्रावधान रखा गया था। लेकिन, उसके बाद कृषि में सार्वजनिक निवेश निरंतर घटता ही गया है। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल के बाद से ही कृषि में सार्वजनिक निवेश की उपेक्षा से आज देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 50 प्रतिशत से घटकर 14 प्रतिशत रह गया है और हमारी प्रति एकड़ उत्पादकता अंतर्राष्ट्रीय औसत की 1/3 से भी न्यून है। भारत के पास विश्व की सर्वाधिक 18.9 करोड़ हेक्टर कृषि योग्य भूमि एवं विश्व का सर्वाधिक (6.67 करोड़ हेक्टर) सिंचित क्षेत्रफल है। देश को प्रतिवर्ष हिमपात व वर्षा से कुल 40 करोड़ हेक्टर मीटर जल प्राप्त होता है। उसका अनुकूलतम उपयोग करके हमें देश की संपूर्ण कृषि योग्य भूमि को सिंचित बना सकते हैं।

ऐसे में हम अपने कृषि उत्पादन को चतुर्गुणित से कहीं अधिक कर विश्व की दो तिहाई (450 करोड़) जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति करने में सक्षम बन, विश्व की क्रमांक एक की खाद्य शक्ति (Food Power) बन सकते हैं। किसान की आय दोगुनी हो जाने पर वह भी उस आय से बाजार से विविध उत्पादकीय उद्योगों का माल प्रचुरता में खरीदेगा– यथा उनमें बर्तन, पंखा, फ्रिज, स्कूटर, टी.वी., वस्त्रादि सम्मिलित है। उससे देश में औद्योगिक, उत्पादन, रोजगार, आय, सरकार का कर राजस्व आदि सभी बढ़ेगें और विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।

## कृषिः समग्र विकास की आधार

हमारे देश से प्रतिवर्ष जो 20 करोड़ हैक्टेयर मीटर जल बहकर समुद्र में विलीन हो जाता है, उसका यथोचित्त उपयोग करके, हम अपने सिंचित क्षेत्र को 6.67 करोड़ हैक्टेयर के वर्तमान स्तर से, 16 करोड़ हैक्टेयर तक बढ़ा सकते हैं। ऐसा करके देश विश्व की क्रमांक एक की खाद्य शक्ति बनकर विश्व की दो तिहाई जनसंख्या की खाद्य आपूर्ति कर सकता है। देश में आज असिंचित भूमि में खाद्यान्न उत्पादकता 750 किग्रा. प्रति हैक्टेयर व सिंचित क्षेत्र में 3 टन प्रति हेक्टर है। वहीं जैविक खाद–प्रधान उन्नत कृषि तकनीक वाले देश नीदरलैंडस् में खाद्यान्न उत्पादकता 9 टन प्रति हैक्टेयर है। देश में उपलब्ध जल राशि से अपनी सिंचाई क्षमता बढ़ाकर कुल 16 करोड़ हैक्टेयर कर लेने पर, देश का कृषि उत्पादन सवा दो गुना तक सहजता से किया जा सकता है एवं नीदरलैंड्स की तरह कृषि जैविक खाद प्रधान व उसमें उन्नत कृषि पद्धतियों का समावेश कर, देश की कृषि उपज को 6 गुना किया जा सकता है। ऐसा करके हम 'विश्व का भरण–पोषण करने में समर्थ देश' के रूप में अपने नाम 'भारत' को पुनः सार्थक कर सकते हैं। 'भारत वर्ष' नाम की प्राचीन निरूक्ति यही कहती है, यथा –

**''भरणात् प्रजानाच्चैव मनुर्भरत उच्यते। निरूक्त यवचनैश्चैव वर्ष तद् भारत स्मृतम्।।** (मत्स्य पुराण)''

**''विश्व भरण पोषण कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई।**
(राम चरित मानस)''

**''भरणात् प्रजानां सर्वेमहीयां शुश्रुषणं तदैव भारत अस उच्यैते।।** (निरूक्त)''

अस्तु! इस प्रकार हम अपनी कृषि–आय, अर्थात् कृषि क्षेत्र के सकल घरेलू उत्पाद में इस वृद्धि से देश की सकल वार्षिक आर्थिक वृद्धि दर में द्रुत वृद्धि और बढ़े हुए कृषि निर्यातों से संपूर्ण विदेश व्यापार के घाटे को समाप्त भी कर सकते हैं। कृषि पर निर्भर इस देश की आधी से अधिक जनसंख्या की आय बढ़ने पर बढ़ी हुई आय से होने वाली अतिरिक्त खरीददारी व मांग–वृद्धि से, देश में औद्योगिक उत्पादन वृद्धि दर भी 2 से 3 गुना तक सहजता से हो जायेगी।

## सार्वजनिक निवेश के अभाव के न्यून उत्पादकताः

कृषि में जहाँ प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि में कुल निवेश में सार्वजनिक निवेश का अनुपात क्रमशः 50 प्रतिशत, 50 प्रतिशत व 62 प्रतिशत रहा है, वह अब घटकर मात्र 17.6 प्रतिशत रह गया है। कृषि में सार्वजनिक निवेश जहाँ 1976–80 के बीच हमारी जीडीपी का 3.4 प्रतिशत रहा है, वह घटकर अब 1.8 रह गया है। कृषि अनुसंधान पर हमारा निवेश हमारे कृषि क्षेत्र की जीडीपी का मात्र 0.7 प्रतिशत है **इसलिये कृषि उत्पादकता में हम विश्व के उच्च कृषि उत्पादकता वाले देशों के 1/6** भी से पीछे हैं (देखें तालिका – 1)।

इसके अतिरिक्त उत्पादकता में विविध राज्यों में भारी अंतर है (तालिका 2 व 3)। उचित प्रयत्नों से इसे ठीक किया जा सकता है। हमारे कुल कृषि योग्य क्षेत्रफल का लगभग 2/3 क्षेत्रफल असिंचित है और सिंचित व असिंचित क्षेत्र की उत्पादकता में भी 4:1 से भी अधिक का अंतर है हम अपने उपलब्ध जल संसाधनों से सिंचित क्षेत्र को दोगुना अत्यंत सहजता से कर सकते है। हम

**तालिका–1: अन्य देशों से उत्पादकता में पिछड़ापन**

| *Rank* | *Produce* | Average yield, India (2010) *(tonnes per hectare)* | World's most productive farms (2010) *(tonnes per hectare)* | *Country* |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Rice | 3.3 | 10.8 | Australia |
| 2 | Cow milk | 1.2[1] | 10.3[1] | Israel |
| 3 | Wheat | 2.8 | 8.9 | Netherlands |
| 4 | Mangoes | 6.3 | 40.6 | Cape Verde |
| 5 | Sugar cane | 66 | 125 | Peru |
| 6 | Bananas | 37.8 | 59.3 | Indonesia |
| 7 | Cotton | 1.6 | 4.6 | Israel |
| 8 | Fresh Vegetables | 13.4 | 76.8 | USA |
| 9 | Potatoes | 19.9 | 44.3 | USA |
| 10 | Tomatoes | 19.3 | 524.9 | Belgium |
| 11 | Soyabean | 1.1 | 3.7 | Turkey |
| 12 | Onions | 16.6 | 67.3 | Ireland |
| 13 | Chick peas | 0.9 | 2.8 | China |
| 14 | Okra | 7.6 | 23.9 | Israel |
| 15 | Beans | 1.1 | 5.5 | Nicaragua |

Source : Food and Agriculture Organisation : FAOSTAT 2013, 1. टन दूध प्रति गाय

| तालिका–2: देश में उत्पादकता अंतराल | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | Irrigated | | | Rainfed | | | |
| State | Paddy | Wheat | Mustard | Maize | Bajra | Jowar | Groudnut |
| Andhra Pradesh | 123 | 23 | | | 191 | 231 | 83 |
| Assam | 175 | 46 | 144 | | | | |
| Bihar | 162 | 74 | 174 | 195 | | | 25 |
| Gujrat | 60 | 43 | 124 | 99 | 191 | 541 | 1 |
| Harayana | 55 | 25 | 1 | 3 | 85 | | |
| HP | 49 | 163 | 420 | 11 | | | |
| Karnataka | 132 | 28 | | | 258 | 292 | 49 |
| Kerala | 166 | | | | | | |
| MP | 135 | 73 | 89 | 105 | 165 | 231 | 55 |
| Maharashtra | 140 | 102 | | | | | |
| Orissa | 115 | 66 | 63 | 153 | | | 60 |
| Punjab | 87 | 40 | 25 | 6 | | | |
| Rajasthan | 27 | 82 | 130 | 114 | 309 | | 106 |
| Tamil nadu | 61 | | | | 163 | 479 | 62 |
| Uttar Pradesh | 101 | 93 | 164 | 106 | 92 | | 106 |
| West Bengal | 90 | 19 | 131 | 11 | | | |

Source : Agricultural statistics at a Glance, Directorate of Economics and Statistics.

नदियों में बहकर जाने वाले 20 करोड़ हैक्टर मीटर पानी में से केवल 2.5 करोड़ हैक्टर मीटर पानी का ही उपयोग कर पा रहे है। शेष 17.5 करोड़ हैक्टर मीटर पानी बिना उपयोग में लाये नदियों में बहकर चला जा रहा है। देश के जलातिरेक वाले क्षेत्रों से जलाभाव वाले क्षेत्रों में, पर्यावरण को प्रतिकुल रूप से प्रभावित किये बिना, यदि जल का अंतरण कर लिया जाये तो देश का सिंचित क्षेत्रफल 16 करोड़ हैक्टर किया जा सकता है। इसलिये ठीक से प्रयास करें तो हम देश के उपलब्ध जल संसाधनों से संपूर्ण कृषि योग्य क्षेत्र के 90 प्रतिशत को सिंचित किया जा सकता है (देखें तालिका–4)। अतएवं देश को सिंचाई पर द्रुतगति से निवेश प्रावधान बढ़ाना होगा।

### अति रसायन प्रधानता के दुष्प्रभाव

**पोषक तत्वों का विषम अनुपातः** रासायनिक उर्वरकों के उपयोग में असंतुलन भी आज अत्यंत चिंताजनक है। वैज्ञानिकों के मतानुसार नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश का अनुपात 4:2:1 होना चाहिये। लेकिन, हमारे यहाँ नाइट्रोजन, फॉस्फोरस व पोटाश (एन.पी.के.) के विषम अनुपात के कारण बड़ी मात्रा में भूमि ऊसर व अंत–उर्वरा रहित होती चली गयी है। हाल ही में आये संसदीय समिति के एक प्रतिवेदन में कहा गया है कि पंजाब में एन.पी.के. के अनुपात की विषमता 39:9:1 पर पहुंच गयी है एवं इसका राष्ट्रीय औसत भी आज 7:3:1 पर चला गया है। इसलिये प्रति किलो एन.पी.के. से जहाँ 1970 में 50 किलो अनाज की उपज मिलती थी वह घटकर 15–20 किलो तक ही रह गयी है। पूरे देश में ही पोटाश, यशद (जिंक) की कमी व अन्य सूक्ष्म पोषकों की कमी एवं भूमि की उर्वरता बढ़ाने वाले सूक्ष्म जीवाणुओं के अभाव में भूमि की उर्वरता में भारी कमी आयी है। उसे बढ़ाने के लिये किसान द्वारा केवल यूरिया के अधिकतम उपयोग से भूमि और बंजर होती जा रही है।

जैव विविधता की दृष्टि से कई ग्राउंड नेस्टिंग बर्ड्स अर्थात भूमि पर घौंसले बनाने वाली चिड़ियाएँ लगभग दो फीट ऊंची झाड़ियों व घास में ही रहती हैं। तितलियों व कीट–पतंगों के लिये भी ऐसी घास व झाड़ियाँ अत्यंत उपयोगी होती है। इन वनस्पतियों में से अनेक पेड़–पौधों की जड़ें, उनसे निकलने वाला ह्यूमस व कई ब्रॉयोफाइट्स भी मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ाते हैं व स्वयं भी बड़ी मात्रा में वर्षा जल को धारित कर उसे धीरे–धीरे छोड़ते हुये जल स्रोतों में वर्ष भर जलापूर्ति बनाये रखने में सहायक सिद्ध होते हैं। इस प्रकार आज अपने समग्र पारिस्थितिकीय संतुलन के संरक्षण हेतु प्रत्येक क्षेत्र–विशेष की पारंपरिक जैव विविधता का रक्षण व संवर्द्धन पर्यावरण प्रबंध की मुख्य पूर्वावश्यकता है।

| तालिका–3: उत्पादकता में राज्यवार भारी अंतर | | | |
|---|---|---|---|
| Crop | Average farm yield in Bihar | Average farm yield in Karnataka | Average farm yield in Punjab |
| | *kilogram per hectare* | *kilogram per hectare* | *kilogram per hectare* |
| Wheat | 2020 | unknown | 3880 |
| Rice | 1370 | 2380 | 3130 |
| Pulses | 610 | 470 | 820 |
| Oil seeds | 620 | 680 | 1200 |
| Sugarcane | 45510 | 79560 | 65300 |

Source: Mahadevan, Renuka, Asia Pacific Development Journal (Dec. 2003) P. 57-72

| TABLE 4: LAND AND WATER RESOURCES OF INDIA[1] | |
|---|---|
| **Particulars** | **Quantity** |
| Geographical Area of India | 329 million ha. |
| Flood Prone Area | 40 million ha. |
| **Ultimate Irrigation Potential of the Country** | 160 million ha. |
| **Total Cultivable Land Area** | 184 million ha. |
| Net Irrigated Area | 6.67 million ha. |
| Natural Runoff (Surface Water and Ground Water) | 1869 Cubic km. |
| Estimated Utilisable Surface Water Potential | 690 Cubic km. |
| Groundwater Resource | 432 Cubic km. |
| Available Groundwater resource for Irrigation | 361 Cubic km. |
| Net Utilisable Groundwater resource for irrigation | 325 Cubic km. |

Source: National Institute of Hydrology, 1: Water Resource India, National Institute of Hydrology.

**कृषि मित्र कीटों का विनाशः** इसी प्रकार आज देश में हम जिन नियोनिकोटिनोइड श्रेणी के कीटनाशकों का द्रुतगति से उपयोग बढ़ा रहे हैं, उन्हें यूरोप ने तो वर्ष 2013 से ही अस्थायी रूप से प्रतिबंधित कर दिया था। उनसे वहाँ मधुमक्खियाँ द्रुतगति से विलोपित हो रही थीं, जिससे उनकी विविध फसलों की उत्पादकता तेजी से कम होने लगी थी। अब 2017 से वे इन्हें पूरी तरह से प्रतिबंधित कर रहे हैं। वस्तुतः, इन नियोनिकोटिनोइड श्रेणी के कीटनाशकों के छिड़काव के बाद उन फसलों के पुष्पों से पराग ग्रहण करने वाली मधुमक्खियों की स्मृति नष्ट हो जाती थी और वे अपने छत्तों तक नहीं पहुँच पाती थी। हमारे देश में नियोनिकोटिनोइड श्रेणी के इन घातक कीटनाशकों का व्यापक उपयोग हो रहा है और कई कृषि विश्वविद्यालयों में इनकी व ऐसे ही कई घातक कृषि रसायनों यथा एण्डोक्राइन डिस्टर्बिंग कीटनाशकों आदि की ट्रॉयल्स भी व्यापक स्तर पर लगाई जा रही हैं। कृषि रसायनों के ही अति–प्रयोग के कारण, भूमि में पाये जाने वाले केंचुएं, फसलों के मित्र कीटों व कई सूक्ष्मजीवियों के नष्ट होते चले जाने से भी मृदा, अर्थात सॉइल की उर्वरा शक्ति व जलग्रहण क्षमता भारी मात्रा में प्रभावित हुई हैं। केंचुएं प्रति हेक्टर जमीन में वर्ष भर में 6 लाख से अधिक छिद्र कर दिया करते थे। इन छिद्रों से ही पानी रिस कर भू–गर्भ तक पहुंचता था, जिससे सहस्त्राब्दियों से, भू–गर्भ का जल स्तर अत्यंत ऊंचा बना रहा है। आज कैंचुओं व तत्सम कीटों व अनेक सूक्ष्म जीवियों के विलोपन से देश के आधे से अधिक जिले डार्कजोन में बदल रहे हैं। हमें आज अफ्रीकी कैंचुओं को आयात करके वर्मी कम्पोस्ट बनाने पर विवश होना पड़ रहा है।

आज कई पैरासाइटॉइड कहे जाने वाले, फसलों के परजीवी–मित्र कीटों के विलोपन से भी हमें उत्तरोत्तर, घातक कीटनाशी रसायनों का प्रयोग करना पड़ रहा है। इन कीटों का जीवन चक्र फसलों को नष्ट करने वाले कीटों व कृमियों पर ही पूरा होता है। इसलिए वे अनादि काल से विविध फसलों की रक्षा करते आये हैं। किसी भी फसल या फलों के बगीचों पर उसे नुकसान पहुँचाने वाले कीटों का प्रकोप होने पर उस कीट प्रकोप–ग्रस्त फसल या फलों के वृक्षों में प्रकृति–जन्य ऐसे सुगंधित जैव रसायनों का संश्लेषण होता रहा है जिनकी सुगंध से वे पैरासाइटॉइड श्रेणी के परजीवी कीट आकृष्ट होकर आते थे व उस फसल या फल के नाशक कीटों को समाप्त कर देते थे। परिणामस्वरूप, वह फसल या फलों के बगीचे पैरासाइटॉइड श्रेणी के मित्र कीटों के सहयोग से बच जाते थे। कई कीट अपने अण्डे ही इन फसल नाशक कीटों पर देते थे, जिनसे लार्वा निकलकर उन फसलनाशी कीटों को समाप्त कर देते थे। ऐसी ही कई चींटियाँ व चीण्टे भी भूमि से बाहर आकर इन फसलों की रक्षा करते आये हैं। ये सभी आज अति रसायन प्रधानता से समाप्त हो रहे हैं।

**पर्यावरण असंतुलनः** इस अवसर पर यह भी स्मरणीय है कि कृषि विकास के हमारे सभी प्रयास यशस्वी तब ही हो सकेंगे, जब हम अपने पारस्थितिकी–तंत्र अर्थात् इकालॉजी को भी सुरक्षित रख पायेंगे। हमारी फसलों की 15–18 प्रतिशत उत्पादकता में कीट परागणकर्त्ताओं अर्थात् इंसेक्ट पॉलिनेटर्स (insect pollinators) का विशेष योगदान है। हमारे परिवेश व पारिस्थितिकी–तंत्र में ऐसी परागणकर्त्ता मधुमक्खियों, तितलियों, भृंग, भ्रमर, मोथ, बीटल आदि कीट–पतंगों की संख्या तेजी से घट रही है। विश्व के कुल तीन लाख से अधिक प्रकार के एंजियोस्पर्म श्रेणी के पुष्पित होने वाले पेड़–पौधों की प्रजातियाँ और इन पर सहजीवी डेढ़ लाख से अधिक प्रजातियों के कीट–पतंगे परस्पर अवलंबित हैं। कई बागवानी फसलों की आधी तक उपज में इन कीट परागणकर्त्ताओं का अहम योगदान है। बादाम जैसा पेड़ तो कीट परागित (insect pollinated) पादप ही है। लेकिन, देश में घटती हरीतिमा, तेजी से विलोपित हो रही जैव विविधता, अत्यंत सीमित प्रजातियों का पौधारोपण व अनेक आधुनिक कीटनाशी रसायनों से पारिस्थितिकी तंत्र का यह सुकोमल संतुलन विनष्ट होता जा रहा है। कई मधुमक्खियाँ व कीट–पतंगे आदि आधा किमी. की परिधि से आगे नहीं जा सकते हैं। कुछ पक्षी भी 2–3 किमी. की परिधि से आगे नहीं जा पाते हैं। इसलिये, ऐसी प्रत्येक आधा किमी. से 2 किमी. की परिधि में कीट–पतंगों एवं पक्षियों को आवास व आहार के लिए हर मौसम में पुष्प व फल देने वाली सभी पारंपरिक

पादप प्रजातियाँ का होना व उनका सतत् संरक्षण परम–आवश्यक है। एक ही या सीमित प्रजाति के पेड़–पौधे हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण नहीं कर पायेंगे। उदाहरणतया– केवल नीम का ही पौधारोपण करने पर नीम में पुष्प मात्र 15–20 दिन रहते हैं व उनमें निम्बोली भी 15–20 दिन तक ही रहती है। उसके बाद कई किमी. तक केवल नीम की बहुलता की दशा में, पराग व फल की खोज में कीट–पतंगे व फल–भक्षी पक्षी भूख से ही मर जाते हैं।

**पारंपरिक प्रजातियों व उनको दुर्लभ जैव द्रव्य का विलोपनः** भारत विश्व का सर्वाधिक जैव विविधता वाला देश रहा है। लेकिन 3–4 दशकों में हमने अपने आधे से अधिक जैव द्रव्य व पारंपरिक बीजों को कृषि की मुख्य धारा से विलोपित हो जाने दिया है। भारत पाये जाने वाले तृण, अन्न, फल व सब्जियों की अनेक प्रजातियाँ व उनका जैव द्रव्य विलोपित होता जा रहा है। अनेक वन्य वानस्पतिक प्रजातियों के विलक्षण अनुवांशिकीय गुण भी जैव विविधता के महत्व को कई गुना बढ़ा देते हैं। अफ्रीका में पाये जाने वाले वन चँवले या काऊ–पी की एक प्रजाति में कीटाणुरोधी या रोग निरोधक गुण होने से उस पर कोई कीड़ा, फफूंद या अन्य के रोग नहीं लगते रहे हैं। काऊ–पी की इस प्रजाति में रोग प्रतिरोधक गुण देने वाले वंषाणु अर्थात जीन (Gene) को चिह्नित कर, उसे मक्का व सोयाबीन में प्रत्यारोपण कर मक्का व सोयाबीन के रोग प्रतिरोधक (Pest Resistent) बीज तैयार किये गये हैं। भारत में ऐसी वन्य प्रजातियाँ असंख्य हैं। यथा, में एक अमेरिकी खरबूजे पर लगे फफूंद (Fungus) पर कोई भी फफूंदरोधी रसायन (anti-fungal pesticide) प्रभावी नहीं होने पर उसमें एक भारतीय प्रजाति की जंगली खीरा ककड़ी में पाये ऐसे वंषाणु (Gene) का प्रत्यारोपण कर उस खरबूजे की प्रजाति को बचाया जा सका था अर्थात उस भारतीय खीरा ककड़ी का वह फफूंदरोधी वंषाणु एक अनमोल जैव द्रव्य कहा जा सकता है। इस प्रकार प्रकृति में फैली हमारी जैव विविधता एक अनमोल उपहार है, जिसके संरक्षण के प्रयास हमें हर कीमत पर करने होंगे। राजस्थान में पाया जाने वाला 'चीणा' भी विलक्षण गुणवाला ऐसा अनाज है जिस पर किसी कीड़े, घुन, इल्ली आदि का प्रकोप नहीं होता है। चीणा में कीट या रोग प्रतिरोधकता का यह गुण उसके जैव द्रव्य को अरबों डॉलर तुल्य मूल्यवान बना देता है। इसलिये हमें अपनी पारंपरिक प्रजातियों, उनके बीजों व जैव द्रव्य का यत्न पूर्वक संरक्षण करना चाहिये।

अतएवं, कृषि जो आज आधी से अधिक जनसंख्या का जीवन आधार है, संपूर्ण देश के लिये खाद्य सुरक्षा का सुदृढ़ स्तंभ है और समग्र अर्थव्यवस्था को द्रुत गति से आगे बढ़ाने की सामर्थ्य रखती है। उसके विकास की प्रभावी रीतिनीति बनानी आवश्यक है। कृषि के समंवित विकास के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधाओं का विवेचन इस श्रृंखला के आगामी लेख में किया जायेगा।❑❑


## :: सदस्यता संबंधी सूचना ::

अधिक जानकारी के लिए देखें :
http://swadeshionline.in/

मान्यवर,

स्वदेशी पत्रिका आज देश में चल रहे स्वदेशी आंदोलनों का स्थापित प्रतीक बन चुकी है। पिछले कई वर्षों से स्वदेशी पत्रिका ने असंगत एवं एकतरफा वैश्वीकरण, जनविरोधी आर्थिक उदारीकरण के विरोध एवं वैकल्पिक और रचनात्मक स्वदेशी आंदोलन के पक्ष में एक सक्रिय प्रहरी के नाते हमेशा आपको जागरूक बनाया है एवं आपसे संवाद स्थापित किया है। विगत कालखंड में इन सभी मुद्दों पर हमें आप जैसे सजग पाठकों का अपेक्षित सहयोग भी मिलता रहा है और भविष्य में भी मिलेगा ऐसा, विश्वास है।

आपसे आग्रह है कि स्वदेशी पत्रिका की आपकी सदस्यता अवधि यदि समाप्त हो गई हो तो कृपया पिछले समय से आगामी वर्ष तक की राशि धनादेश (मनीआर्डर), चेक एवं मांग पत्र (डिमांड ड्राफ्ट) के माध्यम से शीघ्र भेजने की कृपा करें। पत्रिका के लिफाफे के उपर चिपकाए गए पते की प्रथम पंक्ति में सदस्यता अवधि अंकित है। आप अपनी सदस्यता राशि "स्वदेशी पत्रिका" के नाम पत्रिका के कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। सदस्यता अद्यतन न हो पाने की स्थिति में वित्तीय कारणों से पत्रिका आगे जारी रखना कठिन होगा।

### सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार है :–

| स्वदेशी पत्रिका | वार्षिक | आजीवन |
|---|---|---|
| हिन्दी | 150 रुपए | 1500/– रुपए |
| अंग्रेजी | 150 रुपए | 1500/– रुपए |

हमें आपका सहयोग स्वदेशी आंदोलन को राष्ट्रव्यापी एवं जनोन्मुखी बनाने में प्रमुख भूमिका निभाएगा। कृपया स्वदेशी पत्रिका स्वयं भी पढ़ें एवं अन्य को भी पढ़ने के लिए प्रेरित करें। पत्रिका के संबंध में अपना निष्पक्ष विचार हमें अवश्य भेजें।

आप सीधे बैंक ऑफ इंडिया, खाता नं. **602510110002740, IFSC : BKID- 0006025 (Ramakrishnapuram)** में जमा करवा सकते हैं और उसकी रसीद और अपना पता आप कार्यालय में अवश्य भेजें।

**स्वदेशी पत्रिका कार्यालय, 'धर्मक्षेत्र' शिव शक्ति मंदिर, सैक्टर–8, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22**




View publication stats